भारतवर्ष की प्रमुख नदियों के पौराणिक नाम-एक अध्ययन

पुष्पेन्द्र कुमार अग्रवाल
प्रधान शोध सहायक

डा. शरद कुमार जैन
वैज्ञानिक-एफ

यतवीर सिंह
वरिष्ठ शोध सहायक

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, जलविज्ञान भवन, रूड़की।

सारांशः

जल मानव जीवन के लिए अमूल्य है तथा जल के बिना जीवन की परिकल्पना भी सम्भव नहीं है। जल का प्रमुख स्रोत होने के कारण नदियों के तट पर विभिन्न संस्कृतियां एवं जन-जीवन विकसित हुए हैं। विश्व की अधिकांश नदियों को उनकी स्थिति, व्यवहार, जल के रंग-रूप एवं पौसणिक किवदन्तियों के आधार पर अपने मूल नामों के साथ अन्य पौराणिक एवं वैकल्पिक नामों से भी जाना जाता है। प्रस्तुत प्रपत्र में विश्व की प्रमुख नदियों के साथ-साथ भारतवर्ष की अधिकांश नदियों के पौराणिक नामों तथा संबद्ध मान्यताओं का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

1.0 प्रस्तावना

मानव जीवन के लिए जल एक महत्वपूर्ण घटक है। जल के बिना जीवन की परिकल्पना भी संभव नहीं है। पृथ्वी की सतह का तीन चौथाई भाग जल से घिरा होने के कारण पृथ्वी को नीले ग्रह के नाम से भी जाना जाता है। एक आंकलन के अनुसार पृथ्वी पर 14 लाख घन किलोमीटर जल उपलब्ध है, जिसमें से लगभग 97 प्रतिशत भाग समुद्र एवं महासागरों में खारे जल के रूप में पाया जाता है। पृथ्वी पर उपलब्ध शेष जल का अधिकांश भाग ध्रुव प्रदेशों में बर्फ के रूप में तथा पृथ्वी के नीचे भूजल के रूप में उपलब्ध है, जिसका सरलतापूर्वक उपयोग संभव नहीं है। इस प्रकार पृथ्वी पर उपलब्ध जल का बहुत ही सूक्ष्म भाग (>1%) ही उपयोग में लाया जा सकता है। यह जल पृथ्वी पर नदियों, नहरों, जलाशयों, तालाबों एवं झीलों में पाया जाता है।

1.1 नदियों का नामकरण

नदियों की विशिष्टताओं के अध्ययन में नदियों का नामकरण एक अत्यधिक रोचक विषय है। जल का अत्यधिक महत्वपूर्ण स्रोत होने के कारण किसी स्थल पर उपलब्ध जीवन एवं वहां की संस्कृति के विकास में नदियों का एक महत्वपूर्ण योगदान हो जाता है। हमारे पूर्वजों ने नदियों के व्यवहार, जल की मात्रा व गुणवत्ता, संस्कृति, पौराणिक किवदन्तियों इत्यादि का गहन अध्ययन किया था तथा विशिष्टतः प्राचीन देशों में नदियों को धार्मिक, पौराणिक व ऐतिहासिक कथाओं के परिपेक्ष्य में देखा। परिणामतः नदियों के नामों को पौराणिक व ऐतिहासिक परिपेक्ष्य में अपने मूल नामों के अतिरिक्त अन्य वैकल्पिक नामों से भी

नामित किया गया। प्रस्तुत प्रपत्र में भारत वर्ष की विभिन्न नदियों के पौराणिक एवं ऐतिहासक नामों का वर्णन किया गया है। इसके साथ-साथ इन नदियों के नामकरण से संबद्ध विभिन्न प्रसंगों का विस्तृत वर्णन भी इस प्रपत्र में किया गया है।

1.2 रंग के आधार पर विश्व की नदियों का नामकरण

विश्व की अनेकों प्रमुख नदियों को उनके जल के रंग के आधार पर अपने मूल नामों के अतिरिक्त अन्य नामों से भी जाना जाता है। रंग के आधार पर इन नदियों का नामकरण निम्न सारणी में दर्शाया गया है।

सारिणी-1: जल के रंग के आधार पर **विश्व की नदियों का नामकरण**

नदी का मूल नाम	सम्बद्ध देश का नाम	जल के रंग के आधार पर प्रचलित नाम
रियो ब्लैन्को	अर्जेन्टाइना	श्वेत नदी
रियो बान्को	ब्राजील	श्वेत नदी
अज्ञात	अमेरिका	श्वेत नदी
अज्ञात	अमेरिका	लाल नदी
अज्ञात	कनाड़ा	लाल नदी
रियो बरमेजो	अर्जेन्टाइना	लाल नदी
सौंग चे	वियेतनाम	लाल नदी
सोन हे	चीन	लाल नदी
रियो नीगरो	ब्राजील	काली नदी
रियो नीगरो	अर्जेन्टाइना	काली नदी
हवांग हो	चीन	पीली नदी
काली नदी	भारत	काली नदी
वाइट नाइल, ब्लू नाइल	अफ्रीका	संगम के बाद नील नदी

2.0 भारतवर्ष की प्रमुख नदियों के प्राचीन एवं पौराणिक नाम तथा उनसे संबद्ध पौराणिक कथाएं-

भारतीय नदियों के प्राचीन नाम यद्यपि अधिकांशतः पौराणिक पृष्ठभूमि पर आधारित है तथापि अनेकों नदियों के नाम भौतिक विशिष्टताओं, रंग, वनस्पति के प्रकार इत्यादि से भी सम्बद्ध हैं। सम्बद्ध साहित्य के अध्ययन से यह ज्ञात हुआ है कि 'गंगा' शब्द को जल के पर्याय के रूप में माना गया है। परिणामतः इस शब्द का प्रयोग मध्य एवं दक्षिण भारत की कई नदियों के नामकरण के लिए किया गया है। उदाहरणतः गंगा, दक्षिण गंगा, पूर्व गंगा इत्यादि। भूजल को भी साहित्य में पाताल गंगा के नाम से वर्णित किया गया है। भारत वर्ष की प्रमुख नदियों का पौराणिक नामकरण करने के लिए इन नदियों को विभिन्न आवाह क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। तथा आवाह क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाली नदियों के पौराणिक नामों एवं उनसे संबद्ध पौराणिक कथाओं का वर्णन निम्न खण्ड़ों में किया गया है।

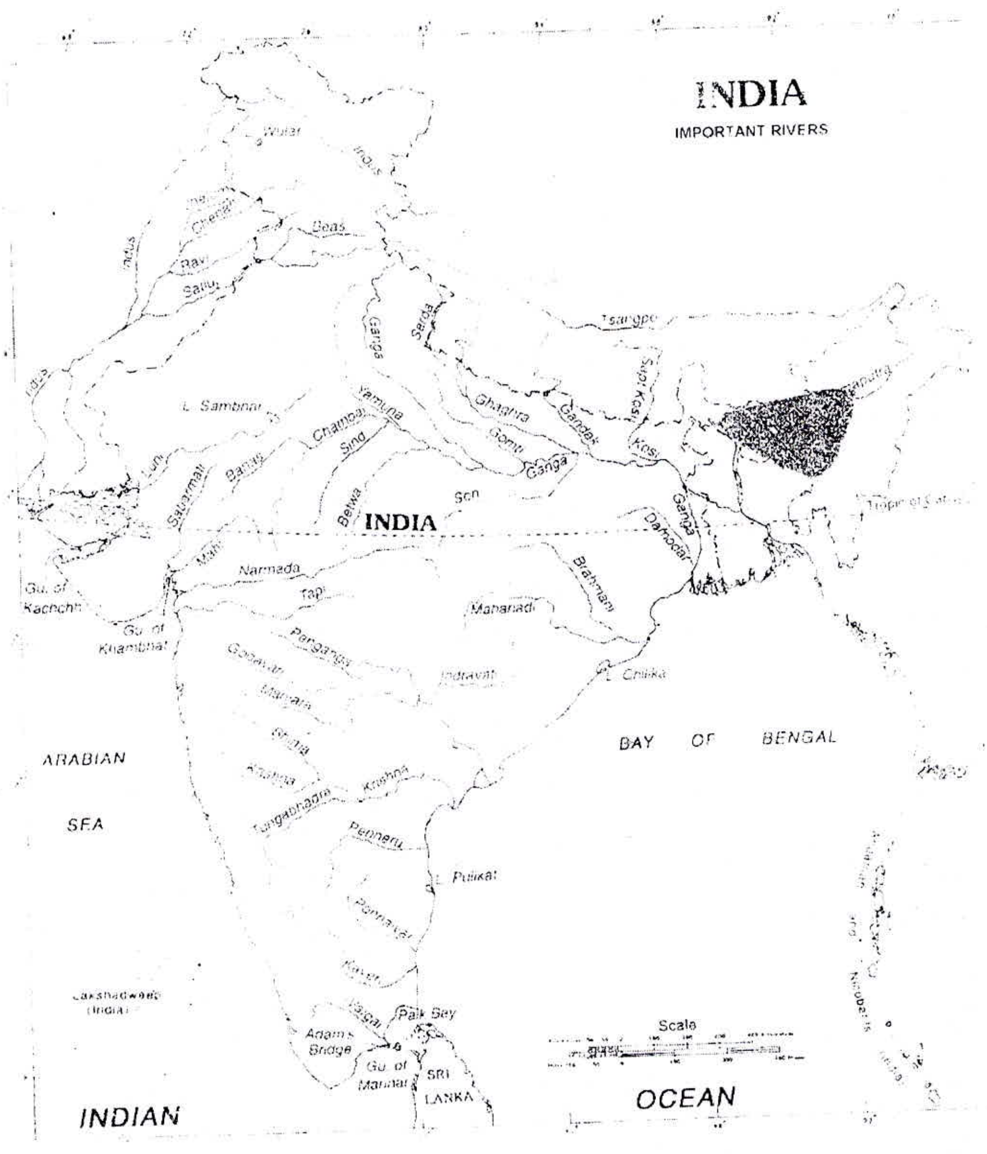

चित्र 1: भारतवर्ष की प्रमुख नदियां

2.1 गंगा बेसिन

2.1.1 गंगा नदी-

हिमालय पर्वत श्रृखंलाओं में गोमुख से उद्गमित होने वाली गंगा नदी को भारत वर्ष में सर्वाधिक पवित्र नदी के रूप में वर्णित किया गया है। हिन्दुओं में गंगा नदी को देवी के समान पूजा जाता है तथा इसे लोग माँ गंगे या गंगा माँ भी कहते हैं। भारतवर्ष में गंगा शब्द को पवित्र एवं शुद्ध जल का पर्याय माना जाने के कारण दक्षिण एवं मध्य भारत की अनेकों नदियों के नाम गंगा नदी पर रखे गये हैं। गंगा नदी के सम्बन्ध में अनेकों पौराणिक कथाऐं प्रचलित हैं। जिन्हें निम्न खण्डों में वर्णित किया गया है।

चित्र 2: गौमुख (गंगा नदी का उद्‌गम)

(क) पौराणिक कथाओं के अनुसार गंगा नदी की उत्पत्ति भगवान विष्णु के चरणों से हुई है। इस कथा के अनुसार भगवान विष्णु के चरणों के पसीने को ब्रह्मा जी ने अपने कमण्डल में भर लिया तथा इस एकत्रित जल से गंगा की उत्पत्ति की। ब्रह्मा व विष्णु दो देवों के स्पर्श के कारण गंगा पवित्र मानी जाती है तथा भगवान विष्णु के चरणों से उत्पन्न होने के कारण इसका नाम विष्णुपदी पडा है।

(ख) दूसरी पौराणिक कथा के अनुसार राजा भगीरथ के पूर्वज राजा सागर के 60 हजार पुत्र अगस्तय ऋष के श्राप से जलकर भस्म हो गये थे। जिनके उद्धार हेतु राजा भगीरथ ने 5500 वर्ष तक ब्रह्मा जी की कठोर तपस्या की। भगीरथ की तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्मा जी ने गंगा को स्वर्गलोक से मृत्युलोक में अवतरित होने की अनुमति प्रदान कर दी थी। गंगा के वेग को सहन करने के लिए भगीरथ ने भगवान शंकर को प्रसन्न किया। परिणामतः भगवान शंकर की सहायता से गंगा पृथ्वी पर अवतरित हुई तथा भगीरथ के पूर्वजों का उद्धार किया। भगीरथ द्वारा गंगा को पृथ्वी पर लाये जाने के कारण गंगा को भगीरथी के नाम से भी जाना जाता है।

चित्र 3: भगवान शंकर की सहायता से गंगा की पृथ्वी पर उत्पत्ति

(ग) ऋग्वेद में गंगा नदी को पर्वतराज हिमालय की पुत्री बताया जाता है।

चित्र 4: भगीरथी नदी

(घ) देवी भागवत के अनुसार लक्ष्मी, सरस्वती तथा गंगा तीनों भगवान नारायण की पत्नियां हैं। पारस्परिक कलह के कारण उन्होंने एक दूसरे को परस्पर श्राप देकर नदी के रूप में पृथ्वी लोक पर अवतरित होने को बाध्य कर दिया था। यद्यपि पृथ्वी लोक पर मां लक्ष्मी किस नदी के रूप में प्रगट हुई इसके सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी प्राप्त नहीं होती है। तथापि उपलब्ध जानकारी के अनुसार सम्भवतः मां लक्ष्मी, सरस्वती नदी के रूप में पृथ्वी पर प्रगट हुई।

(ङ.) महाभारत के अनुसार गंगा को राजा शान्तनु की पत्नी तथा भीष्म पितामह की माता के रूप में जाना जाता है।

(च) महाभारत में गंगा नदी को अर्जुन द्वारा भूजल से उद्‌गमित करने का वृत्तान्त भी मिलता है। यह कहा जाता है कि मृत्यु शैया पर लेटे भीष्म पितामह ने अर्जुन से बाण द्वारा भूजल को पृथ्वी पर

लाकर उनकी प्यास बुझाने को कहा। अर्जुन के ऐसा करने के कारण गंगा भूजल से अवतरित हुई। परिणामतः गंगा नदी को पाताल गंगा भी कहा जाता है।

(छ) एक अन्य पौराणिक कथा के अनुसार गंगा नदी को जाह्नवी के नाम से भी जाना जाता है। यह कहा जाता है कि जब भगीरथ के प्रयासों द्वारा गंगा पृथ्वी पर अवतरित हुई तो उसके तीव्र वेग के कारण ऋषि जाह्नु की तपस्या में विघ्न पडा। ऋषि जाह्नु ने क्रोध में आकर गंगा नदी के संपूर्ण जल को पी लिया। बाद में देवताओं की प्रार्थना पर ऋषि ने इस नदी को अपने कर्णमार्ग से मुक्त किया। अतः गंगा नदी को ऋषि जाह्नु की पुत्री जाह्नवी के नाम से भी जाना जाता है।

गंगा नदी के अन्य पौराणिक नामों में मन्दाकिनी, देवनदी, सुरसरी, त्रिपथगा इत्यादि प्रमुख हैं।

गंगा नदी के गौमुख से उद्गमन के पश्चात गंगा सागर में समुद्र में विलीन हो जाने तक इसके मार्ग में गंगोत्री, ऋषिकेश, हरिद्वार, प्रयाग, वाराणसी, बौद्ध गया एवं गंगा सागर इत्यादि तीर्थ स्थल पड़ते हैं। जहाँ पर लोग इसके पवित्र जल में स्नान करके स्वंय को पुण्यभागी बनाते हैं। ऐसा माना जाता है कि गंगा के पवित्र जल में स्नान करने से मनुष्य के समस्त पापकर्म नष्ट हो जाते हैं तथा मनुष्य जीवन-मृत्यु के आवागमन से मुक्त हो जाता है। गंगा सागर को इन सभी तीर्थों में सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

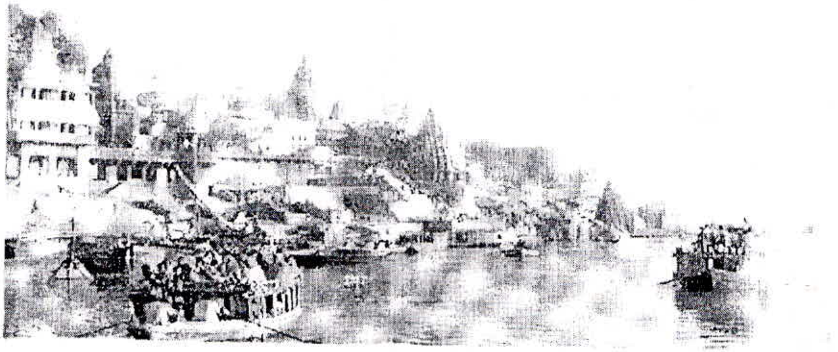

चित्र 5: गंगा नदी - वाराणसी में

2.1.2 यमुना नदी

पर्वत राज हिमालय की गोद में स्थित पवित्र यमुनोत्री (बन्दर पूंछ) नामक स्थल से उद्गमित होने वाली यह नदी, भारतवर्ष की प्रमुख पवित्रम नदियों में से एक है। यमुना नदी को मृत्यु के देव यम की छोटी भगिनी तथा सूर्य की पुत्री माना जाता है। यमुना नदी का जल देखने में काला प्रतीत होने के कारण बाण ने अपनी पुस्तक कादम्बरी में इसे कालिन्दी का नाम दिया है।

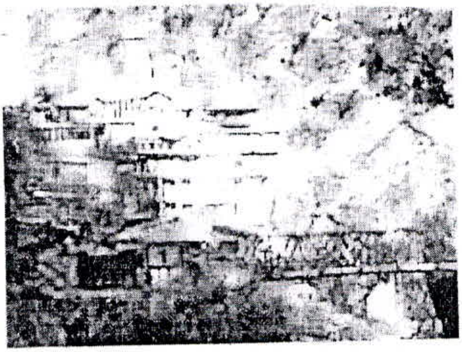

चित्र 6: यमुनोत्री

एक पौराणिक कथा के अनुसार द्वापर युग में मथुरा नगरी के निकट इस नदी में कालिया नामक विशाल नाग अपने परिवार सहित निवास करता था। जिसके विष के कारण नदी का जल विषैला हो गया था। तब भगवान श्रीकृष्ण ने नदी में घुसकर कालिया मन्थन कर इस नाग को परिवार सहित यमुना छोड़कर समुद्र में जाने को विवश कर दिया था। ऐसा कहा जाता है कि यमुना नदी के पवित्र जल में स्नान करने से मनुष्य मृत्यु के भय से मुक्त हो जाता है। यमुना नदी, एक अन्य नदी सरस्वती के साथ इलाहाबाद में गंगा नदी के साथ मिलती है। इन तीनों नदियों के संगम स्थल को प्रयागराज के नाम से जाना जाता है।

सरस्वती नदी के बारे में वर्णन अगले खण्ड में किया गया है। वर्तमान में सरस्वती नदी का कोई अस्तित्व प्राप्त नहीं होता है तथा इसका वर्णन केवल वेदों एवं प्राचीन साहित्य में ही प्राप्त होता है।

2.1.3 पौराणिक नदी सरस्वती

सरस्वती नदी के उद्‌गमन एवं अस्तित्व के बारे में वैज्ञानिकों में अनेकों मतभेद हैं। वेदों में भारतवर्ष में प्राचीन काल में बहने वाली सरस्वती नामक पवित्र नदी का वर्णन प्राप्त होता है। ऋग्वेद के अनुसार यह नदी प्राचीन काल में उत्तराखण्ड में हर की दून हिमनद से उद्‌गमित होकर यमुना के समानान्तर प्रवाहित होती हुई अन्ततः यमुना में मिल जाती थी।

चित्र 7: कालिया मन्थन

ऋग्वेद के अनुसार सरस्वती को अम्बितम (माताओं में श्रेष्ठतम), नदितम (नदियों में श्रेष्ठतम) एवं देवितम (देवियों में श्रेष्ठतम) नामों से वर्णित किया गया है। ऐसा माना जाता है कि सरस्वती भगवान नारायण की पत्नी है, जो श्राप के कारण पृथ्वी पर अवतरित हुई।

वर्तमान साहित्य के अनुसार सरस्वती हरियाणा में बहने वाली एक छोटी नदी है जो घग्घर नदी में विलीन हो जाती है।

कुछ लोग सरस्वती को स्वर्ग में बहने वाली दूधिया नदी मानते हैं, जिसको एक देवी माना गया है।

2.1.4 गन्डक नदी

नेपाल-तिब्बत सीमा के निकट धौलागिरि के उत्तर पूर्व में 7620 मीटर की ऊंचाई से उद्‌गमित होने वाली यह नदी गंगा नदी की सहायक नदी है। नेपाल में इस नदी को काली नदी के नाम से जाना जाता है।

भारतवर्ष के मुजफ्फरपुर जिले में यह नदी नारायणी एवं सालिग्रामिनी के नाम से प्रसिद्ध है। रामायण में इस नदी को कालीमही के नाम से सम्बोधित किया गया है। यह कहा जाता है कि इस नदी की उत्पत्ति भगवान विष्णु के गन्डे (Cheak) के पसीने से हुई है। अतः इस नदी को गन्डक नदी के नाम से जाना जाता है।

2.1.5 चम्बल नदी

चम्बल नदी यमुना नदी की सहायक नदी है। चम्बल नदी का उद्‌गम मध्यप्रदेश में मऊ नामक स्थल से हुआ है। प्राचीन काल से चम्बल नदी को चमरावती के नाम से जाना जाता है। चमरावती का अर्थ है चमड़ा, यह कहा जाता है कि इस नदी के तट पर प्राचीन काल में चमड़ा सुखाया जाता है। प्राचीन काल में चम्बल के तट पर बड़े-बड़े यज्ञों में पशु बलि दी जाती थी। ये यज्ञ राजा रतिदेव द्वारा स्वर्ग की कामना के लिए किये जाते थे। पशुओं की आहुति के कारण इस नदी का रंग लाल हो गया था। पशुओं की त्वचा को इस नदी के किनारे सुखाये जाने के कारण यह नदी चमड़े वाली नदी के रूप में प्रसिद्ध हुई तथा इसका नाम चमरावती पड़ा।

2.1.6 क्षिप्रा नदी

मध्य प्रदेश में प्रवाहित होने वाली क्षिप्रा नदी को मार्कन्डेय के नाम से भी जाना जाता है। एक पौराणिक कथा के अनुसार इस नदी का उद्‌गम भगवान विष्णु के रक्त से हुआ है। 15वीं सदी में मुगल शासक अकबर के शासन में यह विश्वास किया जाता था कि इस नदी में जल के स्थान पर दूध प्रवाहित होता था। संभवतः इसका तात्पर्य यह हो कि उस समय देश धन धान्य से परिपूर्ण था।

2.1.7 सिन्ध नदी (काली सिन्ध)

सिन्ध नदी यमुना नदी की सहायक नदी है। विष्णु पुराण के अनुसार सिन्ध में प्रवाहित होने वाली दसारना नदी को सिन्ध नदी के रूप में चयनित किया गया है। सिन्ध नदी को काली सिन्ध के नाम से भी

जाना जाता है। महाभारत में इस नदी को दक्षिण सिन्ध के रूप में भी वर्णित किया गया है। वर्ध पुराण में काली सिन्ध नदी को सिन्धु पुराण कहा गया है।

2.1.8 कोसी नदी

नेपाल में सप्त कोशिकी से उद्गमित होने वाली यह नदी गंगा नदी की सहायक नदी के रूप में जानी जाती है। अपने मार्ग परिवर्तन के लिए यह नदी अत्यधिक प्रसिद्ध है। इस नदी की तुलना चीन में प्रवाहित होने वाली नदियों से की जा सकती है, जो अचानक भूमि के विशाल भाग को बाढ़ से नष्ट कर देती है। रामायण के अनुसार इस नदी का प्राचीन नाम कौशिकी था। जो ऋषि विश्वामित्र की भगिनी कौशिकी के नाम पर पड़ा। कौशिकी को अपने भाई ऋषि विश्वामित्र के समान ही क्रोध शीघ्र ही आ जाता था।

2.1.9 बागमती नदी

बागमती नदी को विष्णु पुराण में बागवती, वर्धपुराण में बागमती एवं बौद्ध साहित्य में बाचमती के नामों से वर्णित किया गया है। इस नदी के तट पर व्याघ्रों (चीता) की बहुतायत होने के कारण ही सम्भवतः व्याघ्र के नाम पर इस नदी का नाम बागमती पड़ा है।

2.1.10 चन्दन नदी

सोन में मिलने वाली गंगा नदी की इस सहायक नदी को मालिनी एवं चन्दना के नाम से भी जाना जाता है। बौद्ध साहित्य में इस नदी को चम्बा कहा जाता है। क्षेत्र समसा के अनुसार इस नदी को सुलक्षणी या चन्द्रावती भी कहते हैं। जिनावितसा के अनुसार इस नदी का एक नाम अरन्यवहा भी है।

2.1.11 सोन नदी

गंगा की सहायक नदी सोन को अमरकोष में हिरण्यवहा के नाम से भी जाना जाता है। इस नदी की रेत सुनहरी रंग की पाई जाती है।

2.1.12 घाघरा नदी

नेपाल के मारचा चुंग हिमनद से उद्गमित होने वाली यह नदी गंगा की एक मुख्य सहायक नदी है। इस नदी को गोगरा या सरयुग के नाम से भी जाना जाता है। घाघरा नदी का नामकरण सम्भवतः संस्कृत शब्द घाघारा से हुआ है, जिसका अर्थ जल की गडगडाहट की आवाज से है।

2.1.13 हुगली नदी

मुगल शासक शाहजहाँ ने अपने शासनकाल में पुर्तगालियों को बंगाल में व्यापार करने की अनुमति प्रदान की थी। पुर्तगालियों ने बंगाल में 1590 ई. में एक चर्च का निर्माण किया। चर्च के चारों ओर हुगला नामक घास उत्पन्न हुई, जिसके कारण इसके निकट से बहने वाली नदी का नाम 'ओगोलिन' रखा गया। बाद में ओगोलिन शब्द से परिवर्तित होकर नदी का नाम पहले उगली तथा बाद में हुगली पड़ा।

2.2 ब्रह्मपुत्र बेसिन

2.2.1 ब्रह्मपुत्र-

ब्रह्मपुत्र, हिमालय के कैलाश पर्वत शिखर के निकट मानसरोवर से उद्गमित एक दुर्गम, दर्राव, तेज बहाव वाला महानद है। यह महानद पूरे पूर्वांचल में फैला है। ब्रह्मपुत्र का नाम पुर्ल्लिंग हैं जबकि भारत की शेष प्रमुख नदियां स्त्रीलिंग हैं।

किवदन्ती के अनुसार अन्य नदियां स्त्री की प्रतीक हैं परन्तु ब्रह्मपुत्र सृष्टिकर्ता ब्रह्मा जी का पुत्र है। इस सम्बन्ध में एक पौराणिक कथा प्रचलित है। शान्तनु मुनि अपनी पत्नी अमोघा के साथ इसी अंचल में आश्रम बसाकर तपस्या करते थे। एक बार अमोघा के सौन्दर्य पर स्वयं ब्रह्मा जी आसक्त हो गये तथा उन्होंने अमोघा से प्रेम निवेदन किया। लेकिन पर-पुरूष के साथ सम्बन्ध स्थापित करना उचित न समझकर अमोघा ने ब्रह्मा जी से इन्कार कर दिया। परन्तु ब्रह्मा जी इतने कामोत्तेजित हो चुके थे कि उसके निकट ही उनका वीर्य स्खलन हो गया। शान्तनु मुनि को बाहर से लौटने पर जब यह बात पता चली तो उन्होंने ब्रह्मा के वीर्य को अमोघा के गर्भ में स्थापित कर दिया। इससे जिस पुत्र का जन्म हुआ वह ब्रह्मपुत्र कहलाया।

इस महानद को तिब्बत में सांगपो (the purifier) के नाम से जाना जाता है।

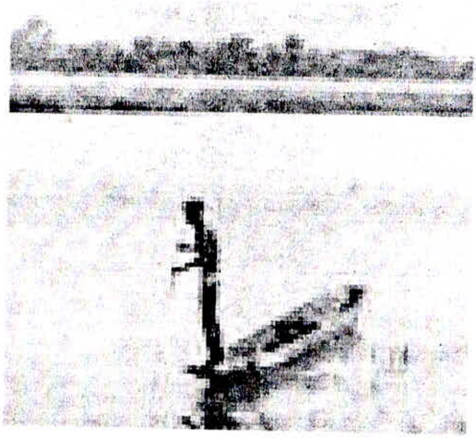

चित्र 8: ब्रह्मपुत्र महानद

2.2.2 लोहित नदी:

लोहित नदी, ब्रह्मपुत्र की सहायक नदी है। असम भाषा में लोहित का नाम लुइत है जो संस्कृत शब्द लोहित्य से बना है, जिसका अर्थ है लाल नदी संभवत वर्षा से इस क्षेत्र की लाल मिट्टी बहकर आने से जल का रंग लाल हो जाता है।

इसके सम्बन्ध में एक पौराणिक कथा प्रचलित है। महर्षि भृगु का पौत्र एवं ऋषि जमदाग्नि का पुत्र राम अति तेजस्वी एवं पितृ भक्त था। एक बार जगदाग्नि की पत्नि रेणुका जल लाने के लिए गंगा तट पर गई। वहां पर उसने चित्रटक नामक गंधर्व को अपनी पत्नियों के साथ क्रीड़ा करते देखा। रेणुका के हृदय में इस क्रीड़ा को देख विकार उत्पन्न हो गया। ऋषि जमदाग्नि को तप द्वारा यह मालूम हुआ तो उन्होंने क्रोधित होकर अपने पुत्र राम को आज्ञा दी कि वह अपनी मां का वध कर दे। पितृभक्त पुत्र राम ने कुठार से अपनी माता का शीश काट दिया। इस वीभत्स नर-संहार के बाद परशु या कुठार उनके हाथ से चिपक गया। उन्होंने अनेकों तीर्थयात्रा की और अन्त में इस नद के जल से अपनी माता का रक्त धोकर कलंक से मुक्त हुए। तभी से उनका नाम परशुराम पड़ा।

2.3 तापी बेसिन

मध्य प्रदेश में बैतूल से उद्गमित होने वाली तापी नदी को ताप्ती नदी भी कहा जाता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार तापी नदी को सूर्य की पुत्री के रूप में भी जाना जाता है। तापी नदी का नाम ताप शब्द से पड़ा है, जिसका अर्थ है ऊष्मा। स्थानीय ब्राह्मणों के अनुसार इस नदी का जन्म सूर्य द्वारा अपनी स्वयं की ऊष्मा से सुरक्षा हेतु किया गया है।

2.4 कृष्णा बेसिन

2.4.1 तुंगभद्रा नदी-

तुंगभद्रा दक्षिण भारत की प्रसिद्ध नदी है। इस नदी को वेदों की धात्री भी कहा जाता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार वेदों की रचना सप्तसिंघव (सात नदियों वाले प्रदेश) में हुई है तथा उन पर भाष्य, तुंगभद्रा नदी के तट पर लिखा गया है। इस नदी की उत्पत्ति के बारे में एक पौराणिक कथा प्रचलित है।

स्कन्द पुराण के अनुसार एक बार भगवान बाराह अपनी थकान दूर करने के लिए एक पर्वत पर विश्राम कर रहे थे। उस समय उनके दो अग्र दांतों से जल टपकने लगा इससे दो धाराएं उत्पन्न हुई। बांऐं दांत से प्रवाहित जलधारा को तुंगा व दांऐं दांत से प्रवाहित जल धारा को भद्रा कहा गया। इस प्रकार तुंगा व भद्रा दोनों बहने हैं जो कर्नाटक राज्य का भ्रमण करके अपनी माता कृष्णा नदी से मिल जाती हैं।

2.4.2 भीमा नदीः

कृष्णा नदी की सहायक नदी भीमा को लोग पुण्यदायिनी भीमा के नाम से भी जानते हैं। दक्षिण भारत में भीमा नदी को गंगा नदी के समान ही सम्मानीय दृष्टि से देखा जाता है।

भीमा नदी के उद्गम के बारे में एक पौराणिक कथा प्रचलित है। इसके अनुसार अयोध्या के राजा भीमक की तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान शिव द्वारा दिये गये वर से भीमा नदी का जन्म हुआ। अतः राजा भीमक के नाम पर ही इस नदी का नाम भीमा पड़ा। भीमा शंकर नामक भगवान शिव का एक ज्योर्तिलिंग इस पावन नदी के तट पर स्थित है।

2.4.3 कृष्णा नदी

कृष्णा नदी दक्षिण भारत में पूर्व की ओर प्रवाहित होने वाली एक विशाल नदी है। पुराणों में इस नदी को कृष्णावेना एवं योगीनितन्त्र में कृष्णावेणी के नाम से वर्णित किया गया है। खरावेला की हाथीगुम्फा लिपिक में कान्हापेना एवं जातक में कान्हापेन्ना के नाम से इस नदी का वर्णन प्राप्त होता है।

2.5 महानदी बेसिन

छत्तीसगढ एवं उडीसा में पवित्र पावनी गंगा कही जाने वाली इस नदी का उद्गम स्थल महर्षि श्रृंगी के आश्रम के निकट है। इस नदी के उद्गम के बारे में एक पौराणिक कथा प्रचलित है, कहा जाता है कि एक बार इस क्षेत्र के सभी ऋषि, महर्षि श्रृंगी के पास महाकुम्भ में स्नान हेतु जाने के लिए आये। ऋषि उस समय ध्यान अवस्था में थे। अतः ऋषि उन्हें ध्यानमग्न छोड़कर महाकुम्भ की ओर प्रस्थान कर गये। जब ऋषि स्नान करके तपोवन लौटे, तब भी महर्षि श्रृंगी ध्यानावस्था में ही थे। तब ऋषियों ने महर्षि के कमण्डल में थोड़ा-थोड़ा जल अपने कमण्डल से भर दिया तथा प्रणाम करके चले गये। जब श्रृंगी ऋषि का ध्यान भंग हुआ तो उनका हाथ पास रखे कमण्डल से लगा तथा कमण्डल के भरा होने के कारण उसमें से जल निकल कर बह निकला। जो नदी के रूप में परिवर्तित हो गया। इसी नदी को महानदी के नाम से जाना जाता है।

2.6 नर्मदा बेसिन

नर्मदा नदी सामान्यतः नर्बदा के नाम से प्रचलित है। इस नदी को रीवा भी कहा जाता है। इसके अतिरिक्त पुराणों में नर्मदा नदी के कुछ अन्य नाम भी मिलते हैं। स्कन्द पुराण के अनुसार इसे दक्षिणगंगा के नाम से जाना जाता है। अमरकोष में नर्मदा नदी को मेकलसूत्र या मेकलकन्यका कहा गया है। इसके अतिरिक्त नर्मदा के अन्य नामों में पूर्व गंगा, मेकलद्रिजा, सोमभावा इत्यादि प्रमुख है।

चित्र 9: महानदी

नर्मदा नदी की उत्पत्ति के बारे में अनेकों कथाऐं प्रचलित हैं। इनमें से एक कथा के अनुसार नर्मदा, अमरकन्टक में रहने वाले एक चरवाहे की सौन्दर्यपूर्ण पुत्री थी। नर्मदा प्रतिदिन अपने पिता का भोजन

लेकर खेतों की ओर, जहाँ चरवाहा जानवर चराता था, जाती थी। मार्ग में वह कन्या कुछ समय एक योगी की कुटिया में व्यतीत करती थी। कुछ समय बाद उस कन्या ने कोई कारण बताए बिना ही आत्महत्या कर ली। जब इस तथ्य का पता योगी को चला तो उसने भी भांग पीकर आत्महत्या कर ली। मृत्यु के बाद उस योगी के कंठ से एक जलधारा निकली जिसका नाम नर्मदा पड़ा।

यह भी कहा जाता है कि नर्मदा नामक वह कन्या गर्भवती हो गई थी तथा उसने कपिलधारा जल प्रपात में कूद कर आत्महत्या कर ली तथा कन्या ने जिस नदी में कूद कर आत्महत्या की उस नदी का नाम नर्मदा पड़ा।

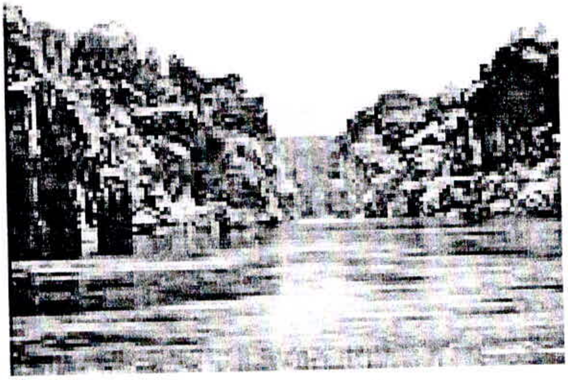

चित्र 10: नर्मदा नदी

2.7 माही बेसिन

वायु पुराण में माही नदी को महाती के नाम से जाना जाता है। इस नदी का नाम उस झरने के नाम पर पड़ा जहाँ से यह उद्गमित होती है। इस नदी को मऊ, माहू या मेन्डा के नाम से भी जाना जाता है।

एक पौराणिक कथा के अनुसार पृथ्वी एवं उज्जैन के महाराज इन्द्रद्युमन के संसर्ग से उत्पन्न कन्या का नाम माही था। जिसके नाम पर इस नदी का नाम माही पड़ा।

2.7.2 सुबरन रेखा नदी

सुबरनरेखा नदी को प्राचीन काल में हिरण्यनरेखा के नाम से जाना जाता है। यह कहा जाता है कि यह नदी अपने नाम के अनुरूप अपने साथ स्वर्ण बहाकर लाती है।

2.7.3 तीस्ता नदी

तीस्ता का शाब्दिक अर्थ है तृष्णा। अर्थात ऐसी तृष्णा जिसका कभी अन्त न हो। पाली भाषा में तीस्ता को तण्डा भी कहते हैं। कालिका पुराण में तीस्ता नदी के उद्भव की कथा वर्णित है। तीस्ता के बारे

में एक रोचक कथा प्रचलित है। कहा जाता है कि एक बार एक असुर ने शिव जी से शक्ति का वरदान प्राप्त कर लिया। परन्तु उसने माता पार्वती का अपमान कर दिया। परिणामतः असुर का माता मार्वती के साथ भयानक युद्ध हुआ। युद्ध में घायल होने के बाद उसकी प्रार्थना से प्रसन्न होकर उसकी प्यास बुझाने हेतु माता पार्वती के स्तनों से दूध जैसी अमृत धारा उद्‌गमित हुई। यही अमृत धारा तीस्ता नदी के नाम से प्रसिद्ध हुई।

2.8 साबरमती बेसिन

राजस्थान में अरावली की पहाड़ियों से उद्‌गमित होने वाली यह नदी राजस्थान व गुजरात राज्यों से प्रवाहित होती हुई अन्ततः कच्छ की खाड़ी में विलीन हो जाती है। यह कहा जाता है कि इस नदी के तट पर साम्भर बहुतायत में पाये जाते थे। जिसके कारण इसका नाम साबरमती पड़ा।

इस नदी से सम्बन्ध में एक पौराणिक कथा के अनुसार महर्षि दधीचि ने इसी नदी के तट पर देवराज इन्द्र को राक्षसों पर विजय प्राप्त करने हेतु वज्र नामक अस्त्र तैयार करने के लिए अपने जीवन का बलिदान कर अपनी अस्थियां प्रदान की थी।

हमारे देश के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी को साबरमती के संत की उपाधि दी गई है तथा साबरमती के तट पर उनका एक विशाल आश्रम स्थित है।

3.0 यूनान की पौराणिक नदियां

भारत वर्ष की नदियों के समान ही यूनानी पुराण के अनुसार कुछ पौराणिक नदियों को पवित्र माना गया है तथा इन नदियों को श्रद्धेय माना गया है। इनमें अधोलोक में बहने वाली पांच नदियां अचेरन, कोसीटस, फ्लेगेथन, लेथ एवं स्टाइक्स प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त यूनान में बहने वाली अचिलूस नदी को यूनान में गंगा नदी के समान ही आराध्य देवी माना जाता है। इन नदियों का संक्षिप्त वर्णन निम्न खण्डों में दिया गया है।

3.1 अचिलूस नदी

अचिलूम या अचिलस नदी पश्चिमी यूनान की एक प्रमुख नदी है। यूनान में अचिलस को नदी का आराध्यदेव माना जाता है। उन्हीं के नाम पर इस नदी का नाम अचिलस या अचिलूस पड़ा है। इस नदी की सहायक नदी असप्रोटोटामस को श्वेत नदी के रूप में भी जाना जाता है। यह नदी यूनान की सबसे बड़ी नदियों में से एक है।

3.2 स्टाइक्स

यूनानी पुराण में स्टाइक्स नदी पृथ्वी एवं अधोलोक के मध्य परस्पर सीमा स्थापित करती है। स्टाक्स नदी को यूनानी पुराण के अनुसार एक देवी की उपाधि दी गई है। यूनानी पुराण में स्टाइक्स को आराध्यदेव ओसियानस एवं देवी टेथीस की पुत्री बताया गया है। स्टाइक्स को जीलस, नाइक, क्राटस एवं बिआ की माता माना गया है तथा स्टाइक्स को आराध्य देवी के समान सम्मान दिया जाता है।

यूनान में नीमफ को भी स्टाइक्स का नाम दिया गया है तथा इस नदी को यूनान में सर्वाधिक पवित्र माना जाता है।

3.3 अचेरन नदी

अचेरन नदी उत्तरी पश्चिमी यूनान के एपिरस क्षेत्र में बहती है। इस नदी को शोक की नदी के रूप में जाना जाता है। यह नदी स्टाइक्स नदी की एक सहायक नदी के रूप में भी जानी जाती है।

3.4 फ्लेगेथन नदी

यूनानी पुराण में फ्लेगेथन नदी को 'अग्नि की झील' की उपाधि दी है। यह नदी अधोलोक की पांच प्रमुख नदियों में से एक है। यह माना जाता है कि इस नदी में जल के स्थान पर अग्नि प्रवाहित होती है, जिसमें जलने के लिए किसी ईधन का उपयोग नहीं होता।

इस नदी के बारे में एक पौराणिक कथा प्रचलित है, कहा जाता है कि स्टाइक्स को फ्लेगेथन से प्रेम हो गया था। परन्तु अपनी अग्नि के कारण स्टाइक्स को अधोलोक जाना पड़ा। तत्पश्चात जिउस द्वारा उसका प्रवाह स्वीकार कर लेने के बाद ये दोनों पुनः एकीकृत हुई।

3.5 कोसिटस

यूनानी पुराण में कोसिटस नदी, अधोलोक की नदी के रूप में प्रसिद्ध है। यूनान में इसे शोक/विलाप नदी के रूप में भी जाना जाता है। इस नदी को संभवतः वैतरणी के रूप में जाना जाता है। यह कहा जाता है कि जो व्यक्ति इस नदी को पार नहीं कर पाता उसे संभवतः सौ वर्षों तक इसके तट पर प्रतीक्षा करनी पड़ती है।

3.6 लेथ

यूनानी पौराणिक कथाओं के अनुसार लेथ नदी को अधोलोक की नदियों में से एक माना जाता है। प्राचीन यूनानी कथाओं के अनुसार इस नदी में आत्माऐं अपनी प्यास बुझाने आती है। अतः इस नदी का जल पीने से मनुष्य अपनी याददाश्त पूर्णतः खो देता है।

4.0 उपसंहार

नदियां किसी भी देश के लिए जीवन रेखा स्थापित करती है। विश्व की अनेकों महान सभ्यताएं नदियों के तटों पर ही विकसित हुई है। हिन्दुओं में नदियों को आराध्य माना गया है तथा विभिन्न धार्मिक साहित्यों उदाहरणातः वेदों, पुराणों, मनु स्मृति, महाभारत इत्यादि में इनकी प्रशंसा में मधुर वचन प्राप्त होते हैं। नदियों के तटों पर विकसित होने वाली सभ्यता तथा पौराणिक कथाओं के कारण इन नदियों को श्रद्धेय माना जाता है तथा इनको विभिन्न पौराणिक पर्यायों से अलंकृत किया गया है।

5.0 संदर्भ

जैन, शरद कुमार, अग्रवाल पुष्पेन्द्र कुमार एवं सिंह वी.पी. (2007), 'हाइड्रोलोजी एवं वाटर रिसोर्सेज ऑफ इन्डिया', स्प्रिंगर प्रकाशक, निदरलैण्ड।

सेठ, एस.एम. एवं राकेश कुमार, 'रिवर्स ऑफ इन्डिया- एन्शियनट नेम', भागीरथ खण्ड 33, केन्द्रीय जल आयोग, नई दिल्ली।